सरलार्थ : आज सारे संसार में 'डिजिटल इण्डिया' की चर्चा सुनी जाती है। इस शब्द का क्या भाव है, यह (ऐसी) मन में जिज्ञासा पैदा होती है। समय के बदलने के साथ मनुष्य की आवश्यकता भी बदलती है। प्राचीन काल में ज्ञान का लेना–देना मौखिक (मुँह से बोलकर) था और विद्या श्रुति परम्परा (सुनने की परंपरा) से ग्रहण की जाती थी। बाद में ताड़ के पत्ते के ऊपर और भोज के पत्ते के ऊपर लेखन–कार्य प्रारम्भ हुआ। बाद के समय में कागज़ और कलम के आविष्कार (प्रचलन) से सभी के ही मन में स्थित भावों का कागज़ के ऊपर लिखना प्रारम्भ हुआ। टाइप की मशीन (Typewriter) के आविष्कार (शुरुआत) से तो लिखी हुई सामग्री (Matter) टाइप की हुई होने से बहुत समय के लिए सुरक्षित रही।

सरलार्थ : वैज्ञानिक (विज्ञान सम्बन्धी) तकनीक की उन्नति की यात्रा आगे गई। आज सारे काम कम्प्यूटर नामक यन्त्र से सिद्ध होते हैं। समाचार–पत्र (अखबार) और पुस्तकें कम्प्यूटर के माध्यम से पढ़ी और लिखी जाती हैं। कागज़ के उद्योग (कारोबार) में वृक्षों के उपयोग के कारण वृक्ष काटे जाते थे, परन्तु कम्प्यूटर के अधिक से अधिक प्रयोग से वृक्षों की कटाई में कमी होगी (आएगी), ऐसा विश्वास है। इससे पर्यावरण की सुरक्षा की दिशा में महान उपकार होगा।

सरलार्थ : अब बाज़ार में वस्तुओं (चीज़ों) को खरीदने के लिए रुपयों की अनिवार्यता (आवश्यकता) नहीं है। 'डेबिट कार्ड', 'क्रेडिट कार्ड' आदि ने सब जगह रुपयों की जगह ले ली है। और बैंक के भी सारे काम कम्प्यूटर से होते हैं। बहुत प्रकार के अनुप्रयोग (APP) रुपये–पैसों के बिना व्यापार (Cashless Transaction) के लिए सहायक हैं।

सरलार्थ : कहीं भी यात्रा करनी हो, आज रेल टिकट की, हवाई जहाज़ के टिकट की ज़रूरत अनिवार्य रूप से नहीं है। सभी टिकट हमारे मोबाइल में 'ई–मेल' के रूप में सुरक्षित होते हैं, जिनको दिखाकर हम आराम से यात्रा का आनन्द लेते हैं। अस्पताल में भी इलाज के लिए रुपयों की ज़रूरत आज अनुभव नहीं होती है। सब जगह कार्ड के द्वारा, ई–बैंक के द्वारा शुल्क (फीस) को दिया जा सकता है।

सरलार्थ : वह दिन बहुत दूर नहीं है जब हम हाथ में केवल एक मोबाइल फ़ोन लेकर सारे काम करने में समर्थ होंगे। जेब में रुपयों की ज़रूरत नहीं होगी। 'पास बुक और चेक बुक' इन दोनों की भी ज़रूरत नहीं होगी। पढ़ने के लिए पुस्तकों और अखबारों की अनिवार्यता (निश्चितता) लगभग समाप्त हो जाएगी। लिखने के लिए अभ्यास पुस्तिका (कॉपी) अथवा कागज़ की, नए ज्ञान की खोज के लिए शब्दकोष की भी आवश्यकता नहीं होगी। अपरिचित मार्ग के ज्ञान के लिए मार्गदर्शक (Guide) की, मानचित्र (नक्शे) की आवश्यकता की अनुभूति भी नहीं होगी। यह सब एक ही यंत्र (मशीन) से किया जा सकता है। सब्जियों आदि की खरीददारी के लिए, फलों की खरीददारी के लिए, गेस्ट हाउस (होटल) में कमरे की बुकिंग के लिए, अस्पताल में फीस देने के लिए, विद्यालय और महाविद्यालय में भी फीस देने के लिए, बहुत कहने से क्या दान भी देने के लिए मोबाइल फ़ोन की मशीन ही काफी है।
डिजीटल भारत (डिजीटल इण्डिया) इस दिशा में हम भारतीय तेजी से आगे बढ रहे हैं।

अभ्यासः (Exercise)

प्रश्न: 1.

अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत–
(निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक पद में लिखिए–)

(क) कुत्र "डिजिटल इण्डिया" इत्यस्य चर्चा भवति?

(ख) केन सह मानवस्य आवश्यकता परिवर्तते?

(ग) आपणे वस्तूनां क्रयसमये केषाम् अनिवार्यता न भविष्यति?

(घ) कस्मिन् उद्योगे वृक्षाः उपयूज्यन्ते?

(ङ) अद्य सर्वाणि कार्याणि केन साधितानि भवन्ति?

उत्तरम्:

(क) संपूर्णविश्वे,

(ख) कालपरिवर्तनेन,

(ग) रूप्यकाणाम्,

(घ) कर्गदोद्योगे,

(ङ) चलदूरभाषयन्त्रेण।

प्रश्नः 2.

अधोलिखितान् प्रश्नान् पूर्णवाक्येन उत्तरत–(निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए–)

(क) प्राचीनकाले विद्या कथं गृह्यते स्म?

(ख) वृक्षाणां कर्तनं कथं न्यूनतां यास्यति?

(ग) चिकित्सालये कस्य आवश्यकता अद्य नानुभूयते?

(घ) वयम् कस्यां दिशि अग्रेसरामः?

(ङ) वस्त्रपुटके केषाम् आवश्यकता न भविष्यति?

उत्तरम्:

(क) प्राचीनकाले विद्या श्रुतिपरम्परया गृह्यते स्म।

(ख) वृक्षाणां कर्तनं संगणकस्य अधिकाधिक–प्रयोगेण न्यूनता यास्यति।

(ग) चिकित्सालये रूप्यकाणाम्/रूप्यकस्य आवश्यकता अद्य नानुभूयते।

(घ) वयम् डिजीभारतम् इति दिशि अग्रसरामः।।

(ङ) वस्त्रपुटके रूप्यकाणाम् आवश्यकता न भविष्यति।

प्रश्नः 3.

रेखांकितपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–(रेखांकित पदों के आधार पर प्रश्न–निर्माण कीजिए–)

(क) भोजपत्रोपरि लेखनम् आरब्धम्।

(ख) लेखनार्थम् कर्गदस्य आवश्यकतायाः अनुभूतिः न भविष्यति।

(ग) विश्रामगृहेषु कक्षं सुनिश्चितं भवेत्।

(घ) सर्वाणि पत्राणि चलदूरभाषयन्त्रे सुरक्षितानि भवन्ति।

(ङ) वयम् उपचारार्थम् चिकित्सालयं गच्छामः?

उत्तरम्:

(क) भोजपत्रोपरि किम् आरब्धम्?

(ख) लेखनार्थम् कस्य आवश्यकतायाः अनुभूतिः न भविष्यति?

(ग) कुत्र/केषु कक्षं सुनिश्चितं भवेत्?

(घ) सर्वाणि पत्राणि कस्मिन् सुरक्षितानि भवन्ति?

(ङ) वयम् किमर्थम् चिकित्सालयं गच्छाम:?

प्रश्नः 4.

उदाहरणमनुसृत्य विशेषण विशेष्यमेलनं कुरुत–(उदाहरण के अनुसार विशेषण एवं विशेष्य का मिलान कीजिए–)

यथा–	**विशेषण**	**विशेष्य**
	संपूर्णे	भारते
	(क) मौखिकम्	(1) ज्ञानम्
	(ख) मनोगताः	(2) उपकारः
	(ग) टंकिता	(3) भावाः
	(घ) महान्	(4) विनिमयः
	(ङ) मुद्राविहीनः	(5) सामग्री

उत्तरम्:

(क) – (1),

(ख) – (3),

(ग) – (5),

(घ) – (2),

(ङ) – (4)

Question 5:

अधोलिखितपदयोः सन्धिं कृत्वा लिखत-

पदस्य	+	अस्य
तालपत्र	+	उपरि
च	+	अतिष्ठत
कर्गद	+	उद्योगे
क्रय	+	अर्थम्
इति	+	अनयोः
उपचार	+	अर्थम्

Answer 5:

पदस्यास्य

तालपत्रोपरि

चातिष्ठत

कर्गदोद्योगे

क्रयार्थम्

इत्यनयोः

उपचारार्थम्

प्रश्नः 6.

उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितेन पदेन लघु वाक्य निर्माणं कुरुत–(उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित पदों से लघु वाक्यों का निर्माण कीजिए–)

यथा– जिज्ञासा – मम मनसि वैज्ञानिकानां विषये जिज्ञासा अस्ति।

(क) आवश्यकता – .....

(ख) सामग्री – .....

(ग) पर्यावरण सुरक्षा – .....

(घ) विश्रामगृहम् – .....

उत्तरम्:

(क) अद्य तु लेखनार्थं कर्गदस्य आवश्यकता नास्ति।

(ख) टंकिता सामग्री अधुना न्यूना एवं प्राप्यते।

(ग) वृक्षेभ्यः पर्यावरण सुरक्षा भवति।

(घ) जनाः तीर्थेषु विश्रामगृहम् अन्वेषयन्ति।

प्रश्नः 7.

उदाहरणानुसारम् कोष्ठकप्रदत्तेषु पदेषु चतुर्थी प्रयुज्य रिक्तस्थानपूर्ति कुरुत–(उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए पदों के चतुर्थी रूप का प्रयोग करके रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–)

यथा– भिक्षुकाय धनं ददातु।। (भिक्षुक)

(क) ..... पुस्तकं देहि। (छात्र)

(ख) अहम् ..... वस्त्राणि ददामि। (निर्धन)

(ग) ..... पठनं रोचते। (लता)

(घ) रमेशः ..... अलम्। (अध्यापक)

उत्तरम्:

(क) छात्रेभ्यः/छात्राय,

(ख) निर्धनाय,

(ग) लतायै,

(घ) सुरेशीय,

(ङ) अध्यापकाय।